पाल कला

- 27th lecture by

Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE,
SAHARSA.

03-05-2020.

Scanned with CamScanner

प्रश्न :- पालकला की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा करें।
प्रश्न :- पालकला की प्रमुख विशेषताओं में बौद्ध धर्म के प्रभाव की चर्चा करें।

भूमिका :-

कहा जाता है कि कला मानव के रचनात्मक कल्पनाओं की मूर्त अभिव्यक्ति के साथ ही किसी संस्कृति की मूलभूत पहचान भी होती है। इस संदर्भ में पाल कला के द्वारा मौर्य काल न सिर्फ निरंतरता एवं विस्तार मिला वरन् आगे चलकर इसका प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हुआ।

पालकला की प्रमुख विशेषताओं को हम कला के विविध रूपों स्थापत्य कला, मूर्तिकला चित्रकला आदि के संदर्भों में देख सकते हैं।

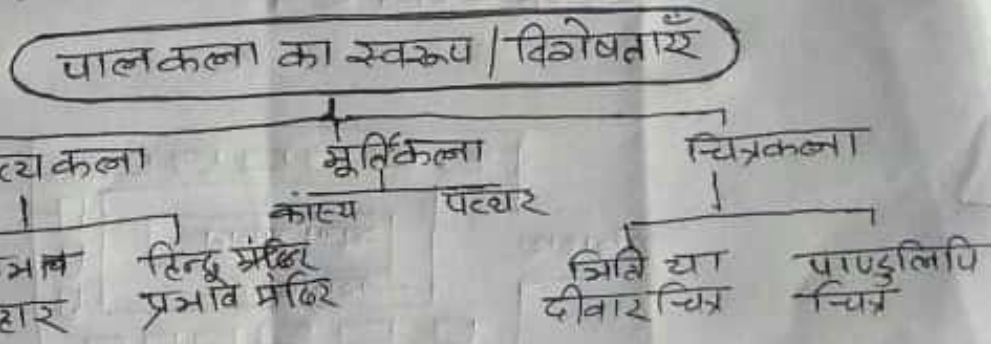

पाल स्थापत्य कला की विशेषताएँ :- पाल स्थापत्य कला की विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है।

- अधिकांश पाल स्थापत्य ईंट निर्मित है, हालांकि कुछ में पत्थरों का प्रयोग भी हुआ है। 'ईंटों' का अधिकांश प्रयोग के पीछे संभवतः मैदानी इलाकों में स्थापत्य का निर्माण था।

Scanned with CamScanner

• पाल स्थापत्य कला अन्य कलाओं की तरह धर्म से प्रभावित है विशेषकर बौद्ध धर्म एंव हिन्दू धर्म से. भारतीय संदर्भ में – कलाओं के प्रारंभिक विकास मे बौद्ध धर्म का विशेष योगदान रहा जो पाल कला में भी दिखता है।

• बौद्ध धर्म के प्रभाव से पाल कला मे विभिन्न महाविहारो, स्तूप एंव चैत्यों का निर्माण हुए। जहाँ महाविहार का संबंध भिक्षुओं के निवास-स्थान शिक्षा-दिक्षा, स्तूप बुध्द के प्रतिक पुजा तथा चैत्यों का संबंध बौद्ध मंदिरो से है।

महाविहार :-

पालकाल मे विभिन्न महाविहार जैसे विक्रमशिला महाविहार, ओदंतपुरी महाविहार, सोमपुरी महाविहार आदि निर्मित हुए। इसमें ओदंतपुरी महाविहार का निर्माण पालवंश के संस्थापक गोपाल द्वारा कराया गया था। वर्तमान मे पर्याप्त अवशेष नही मिलता है। महाविहारो मे विक्रमशिला महाविहार सर्वाधिक उल्लेखनीय है। जिसकी संरचनात्मक विशेषतायें निम्न आरेख मे समझ सकते हैं।

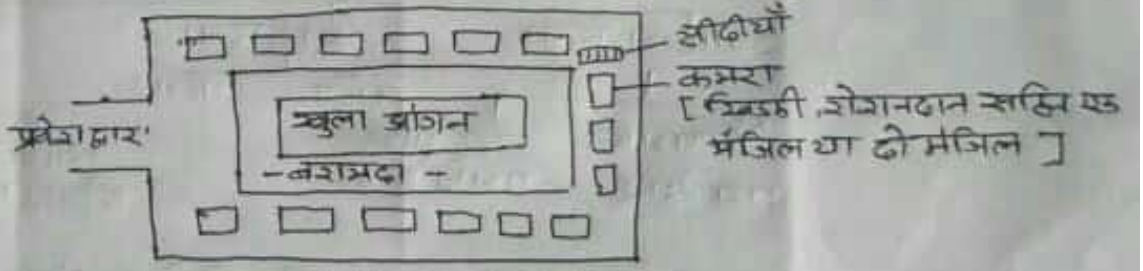

• गोपाल द्वारा निर्मित ओदंतपुरी महाविहार, धर्मपाल द्वारा निर्मित पहाड़पुर (बंगलादेश) स्थित सोमपुरी महाविहा की संरचना लगभग इसी प्रकार की हैं।

• इन महाविहारों के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया के शैलेन्द्रवंशीय शासक बालपुत्रदेव ने नालंदा में इसीकाल मे एक बौद्ध विहार निर्मित करवाया जिसकी शैली पर देशी-विदेशी दोनो तत्वो का प्रभाव दिखता है।

Scanned with CamScanner

पत्थर से निर्मित मूर्तियों की विशेषताएँ :

पाल मूर्तिकला में कांसे के अतिरिक्त पत्थर की मूर्तियाँ निर्मित हुई. इनकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

- इस प्रकार की मूर्तियाँ काले बेसाल्ट पत्थर द्वारा निर्मित हैं जो मुंगेर (बिहार), संथाल परगना (झारखण्ड) आदि स्थलों से मंगाए जाते थे।
- कांसे की मूर्तियों से शरीर अलग इस प्रकार की मूर्तियाँ हस्तनिर्मित मानी जाती हैं।
- इन मूर्तियों में शरीर के अग्र भाग का ही अंकन है तथा पृष्ठ भाग सपाट है।
- कांसे की मूर्ति की भाँति पत्थर की मूर्तियाँ भी अलंकृत हैं।
- पत्थर की मूर्तियों पर भी धार्मिक प्रभाव दिखाई पड़ता है जिसके तहत बौद्ध एवं हिन्दू धर्म से संबंधित विभिन्न मूर्तियाँ निर्मित हुई। कांसे एवं पत्थर की मूर्तियों के अतिरिक्त मृण मूर्तियाँ एवं मृद्भाण्ड आदि भी निर्मित हुई। मृण मूर्तियों ~~एवं मृद्भाण्ड~~ का प्रयोग मुख्यतः सजावट हेतु होता था।

Scanned with CamScanner

मूर्तियों को न सिर्फ हड़प्पाकालीन कांस्य मूर्तियों परम्परा से जोड़ा जा सकता है बल्कि इसकी कलात्मक सौंदर्य की तुलना पाल के समकालीन -चोल कालीन कांस्य मूर्तियों से भी जा सकती है। पाल मूर्तिकला के विभिन्न विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं पर देखा जा सकता है।

पाल मूर्तिकला

कांस्य निर्मित | पत्थर निर्मित

कांस्य निर्मित मूर्तियों की महत्वपूर्ण विशेषताएँ

- इस प्रकार के मूर्तियों को पालकालीन मूर्तियों में विशिष्टता सूचक माना जाता है।
- ये मूर्तियाँ मुख्यतः बिहार के नालंदा, कौंडीहार (गया) सुल्तानगंज आदि स्थान से प्राप्त हुए हैं।
- इस प्रकार के मूर्तियों के निर्माण में धीमन, वीरपाल जैसे मूर्तिकारों का विशेष उल्लेख है। ये मूर्तिकार पाल शासक के समकालीन तथा नालंदा निवासी माने जाते हैं।
- कांस्य मूर्तियों का निर्माण सांचे की सहायता से किया जाता था जिसमें ढलवा पद्धति का प्रयोग होता था।
- इन मूर्तियों को काफी अलंकृत किया जाता था। अर्थात सजावट किया जाता था।
- कांस्य निर्मित इन मूर्तियों पर धार्मिक प्रभाव विशेषरूप से परिलक्षित है। बौद्ध धर्म के प्रभावों को बुद्ध, बोधीसत्व (बुद्ध का अवतार) जैसे मूर्तियों में देखा जा सकता है।
- हिन्दू धर्म से प्रभावित मूर्तियों में विष्णु बलराम आदि की मूर्तियाँ विशिष्ट हैं।

Scanned with CamScanner

स्तूप :- पालकाल मे स्तूप निर्माण की परम्परा का भी व्यवस्थित विकास हुआ जिसका संरचनात्मक स्वरूप निम्न रहा :-

चैत्य !

पाल कला में सबसे पहले से चली आ रही चैत्य निर्माण परंपरा बौद्ध मंदिरो के रूप मे विकसित होती रही, इसका संरचनात्मक स्वरूप निम्न है।

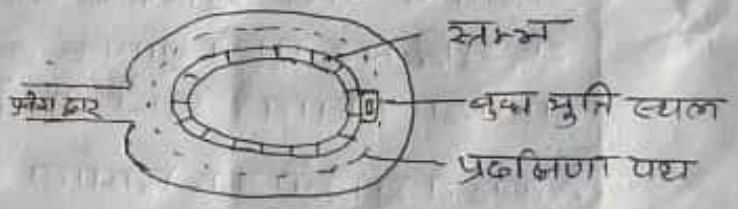

हिन्दु धर्म से प्रभावित स्थापत्य :-

पाल स्थापत्य कला के प्रभावित कुछ प्रमुख मंदिर भी निर्मित हुए जैसे गया स्थित विष्णुपद मंदिर, कहलगाँव का गुफा मंदिर आदि। इसमें गया स्थित विष्णुपद मंदिर की प्रमुख विशेषताएँ है -

- 30 मीटर ऊँचा
- विशिष्ट अर्द्धमण्डप
- अष्टभुजीय स्तम्भ संरचना

यह मंदिर मूलतः उत्तर भारतीय नागर शैली से प्रभावित है।

पाल मूर्तिकला ! - पाल कला के विभिन्न ~~रूप~~ रूपो मे पाल कला का उल्लेखनीय स्थान है। विशेषकर इस काल मे बनी कांस्य

Scanned with CamScanner